सम्बोधन

श्री चतुरानन मिश्र

कृषि मंत्री, भारत सरकार

आज के सम्मेलन के सभापति जी, सर्वाधिक प्रतिष्ठित हमारे राष्ट्रपति जी ! हम लोग, राष्ट्रपति जी आपके बहुत ही आभारी हैं कि आज आपने संस्था के स्वर्ण जयन्ती अवसर पर आकर हम तमाम लोगों को उत्साहित किया है। मुझे पहले से भी मालूम है कि कृषि के प्रति जो आप दृष्टिकोण रखते हैं और इसकी उन्नति के लिए भी इतना प्रयत्नशील हैं, वह स्वाभाविक तौर पर आपको हम लोगों के बीच में खींच लाता है। मेरा स्वयं का भी यह अनुभव है कि शपथ ग्रहण के बाद जब मैं आपसे मिलने के लिए गया तो आपने एक हरे बोर्डर का अंगवस्त्र देते हुए कहा कि भारत को इसी तरह से हरियाली में बदल दो। वह काम तो मेरे लिए बहुत कठिन है लेकिन वह आशीर्वाद का वचन हर वक्त याद रहता है।

जिस संस्था के स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर हम लोग आए हैं, **हमारे जो सांख्यिक (Statisticians) हैं उनका काम बहुत कठिन है** और हम लोगों के लिए नीरस भी है और यह ऐसा काम है जिसमें केवल इन्हीं को रस मिलता है, दूसरों को बहुत कम रस मिलता है और ये चुप-चाप काम करते रहते हैं। शायद समाज को मालूम नहीं है कि ये कितना महत्वपूर्ण काम करते हैं। अगर पूरे समाज को मालूम हो तो लोग इनका बहुत सम्मान करेंगें। लेकिन ये लोग एकान्त में बहुत ही त्याग की भावना से चुप-चाप अपना काम करते चले जा रहे हैं। **ऐसे लोगों को समाज का बहुत ज्यादा प्रेम मिलना चाहिए ये इसके अधिकारी हैं।**

राष्ट्रपति जी, आप अभी आये हैं तो स्वाभाविक है कि आए हैं तो वो भी बात है लेकिन मैं आपका एक मंत्री हूं इस लिहाज से भी कहना चाहता हूं कि **सांख्यिकी की थोडी सी गड़बड़ी से भारी गड़बड़ी पैदा हो जाती है।** ऐसा हुआ कि पिछली सरकार ने बता दिया, हिसाब पत्तर लगाया की ज्यादा गेंहू का उत्पादन हुआ है। हम लोग बहुत खुश थे लेकिन जब ये आंकडे गलत निकले और साल का आखिर आने लगा तो भारी चिन्ता हो गयी कि कहां से गेंहू लाएंगे और भारी दिक्कत में सब कोई फंस गये। **इसीलिए इनका कितना महत्वपूर्ण काम है ये इसी से समझा जा सकता है।** जो फसल का आकलन तैयार किया जाता है वह तो इन्हीं से हो सकता है। **ये अनिश्चितता में निश्चितता लाने की कोशिश करते हैं।** वो फसल तो बहुत हरी-भरी है सब कुछ दिख रहा है कि फसल बहुत अच्छी है। किसी को क्या मालूम है कि कोई दूसरी तरह की हवा चल जाएगी और दाना नहीं भरेगा। तो हरियाली देख करके एक आकलन देते हैं और दाना नहीं भरा तो दूसरा आकलन हो जाता है। इसीलिए यह काम

तो कठिन है लेकिन मेरे जैसे मंत्री के लिए तो भारी संकटपूर्ण है। **यह स्थिति कि अगर आंकड़ों में थोड़ी सी भी गड़बड़ी हो जाए तो निर्णय करने में भारी गड़बड़ी हो जाएगी और कृषि मंत्री तो इनके बिना काम ही नहीं कर सकता है।** अब इधर मैंने सोचा था कि फसल बीमा योजना लागू की जाए और बहुत मांग है कि गांव के आधार पर कीजिए, प्रंखड के आधार पर आजकल होता है। लेकिन जब खंड-वृष्टि होती है और इसलिए अलग-अलग नतीजा निकलता है तो गांव के आधार पर करना असंभव था क्योंकि इसके लिए सांख्यिकी (data) तैयार नहीं है। कोई लोग है नहीं, कि यह दे सकें ताकि गांव के आधार पर बनाया जाए। पंचायत के आधार पर भी हमने शुरु करने का तय किया है और वित्त मंत्रालय में विचाराधीन है लेकिन उसके लिए भी उपयुक्त आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं। वो भी इन्हीं लोगों को बताना पडेगा, इसकी शुरुआत करनी होगी। तो इसीलिए मैनें कहा कि इनका काम अत्यन्त महत्वपूर्ण है। **कोई भी योजना बनाई ही नहीं जा सकती है बिना इनकी मदद के। यदि आंकड़े ना हों तो योजना क्या होगी?** हो ही नहीं सकती और यह एक ही विभाग का, कदाचित मेरी खेती के विभाग का है, सो बात नहीं है। ये सभी विभागों के लिए लागू है, अपनी-अपनी जगह पर सब के लिए। लेकिन खेती में इसका महत्व और भी ज्यादा बढ़ जाता है। अगर गरीबी से लड़ना है तो बिना उचित आंकड़ों के उसकी रणनीति तैयार नहीं की जा सकती, हम नहीं बना सकते। हां यह जरुर गड़बड़ है कि कभी एक आंकड़े दे देते हैं कि इतने लोग गरीबी रेखा से नीचे हैं और 10 बरस के बाद दे देते हैं कि नही और भी बढ़ गया है और भी ये हो गया है। तो कभी-कभी बुनियाद ही बदल देते हैं। तो हम लोग भी फेरे में पड़ जाते हैं कि ये कौन हिसाब से बनाते हैं। पहले ही यह हिसाब कह देते तो कुछ उस लिहाज से अपनी योजना बनाते, तो थोड़ा यह सब चलता है लेकिन बिना इनके कोई आगे काम बढ़ नहीं सकता है। **इसलिए आप ये लोग जो एकान्त, त्याग, परिश्रम और बलिदान करते हैं उसकी जितनी तारीफ की जाए वह कम होगी और सरकार को बराबर ध्यान में रख करके इस काम को करना चाहिए कि हमारे पास ऐसे लोग हैं जो लगातार इस काम को सेवा भाव से करते जा रहे हैं।** इसको महत्व दे करके आगे बढ़ाना चाहिए। आज की परिस्थिति में यह और भी जरुरी है, वैसे यह तो पहले जमाने में भी होता था।

मेरा सांख्यिकी से संबंध है। एक तरह से बहुत पुराना है। मैं, अंग्रेजों भारत छोड़ो आन्दोलन के बाद जेल से छूट करके जब आया तो सन् 1944 में गिरिडीह में काम करने के लिए भेजा गया उस वक्त सी. पी. आई. की तरफ से। डा. पी. सी. महालानोबीस की सांख्यिकीय प्रयोगशाला उस वक्त कहलाती थी बाद में उसे संस्थान कहा जाने लगा। उस वक्त शायद ये आपकी जो सोसाइटी है इसके पहले का नाम कोई इम्पीरियल सोसाइटी वगैरह रहा करता था, ये इनसे हम लोगों का बहुत बड़ा झगड़ा था उस शब्द से और उनके सोसाइटी से भी, इम्पीरियल को

हम लोग मानते थे नहीं। डा. पी. सी. महालानोबीस के संस्थान में आने-जाने का मौका मिलता था क्योंकि उन्होने एकत्रित कर रखा था, देश भक्त थे और इसमें रुचि रखते थे, उन लोगों को लेकर चलते थे। कभी-कभी हम लोग हंसते भी बहुत थे उनके साथ रह करके, क्योंकि मानव-विज्ञान पर जब वो दस्तावेज बनाते थे तो किसी का नाक इतना नाप करके, किसी का कान इधर जोड़ करके, किसी का ये करके, अलग-अलग हिसाब मानव विज्ञान का दिया करते थे। उसी तरह से वह एरिया था ट्रायबल का, तो सांख्यिकीविद् जो आंकड़ा जमा करते थे फसल कटाई का, उसके लिए जो जाते थे तो उनका प्रारंभ में बड़ा विरोध होता था। लोग कहते थे कि आया है देखकर हमारा लगान बढ़ा देगा कि बहुत ज्यादा उपज होती है। ये बहुत तो दिक्कत है फील्ड वर्कर को काफी दिक्कत उस जमाने में उठानी पड़ती थी। अब तो यह आम सा हो गया है और पुराने जमाने से भी हम लोग इस काम को करते थे। हमारे शास्त्रों में वर्णन है सांख्यिकी का, हमारे उस जमाने में भी सांख्यिकी से काम लेते थे और चाणक्य ने भी कौटिल्य शास्त्र में इसका वर्णन किया है कि इसको रखना चाहिये, बिना उसके कर नहीं लगा सकते। पुराने जमाने के जो ज्योतिषी लोग थे वो आंकड़ो का कई साल तक हिसाब रखते थे। मैं एक ज्योतिषी का ही लड़का हूं, जब बहुत छोटा था तो पिता जी को देखता था, वो कि इस नक्षत्र का पहले से ही ठीक करते थे, कब सूरज किस रुप में निकला, कब बादल के टुकड़े आये और उसी हिसाब से किस नक्षत्र में पानी बरसेगा यह बताते थे। छोटा-छोटा सा कागज पर लिखा करते थे और कब बादल आया और किस ऋतु में आया और वो जमा करके साल के आखिर में बताते थे कि ऐसा-ऐसा मौसम होगा। सब तो नहीं मिलता था, सब तो अभी भी नहीं मिलता है। अभी भी मौसम विभाग का कभी-कभी गलत हो जाता है। लेकिन उनका ज्यादा गलत होता था। तो ये आंकड़ा रखने की बहुत दिन से, मानव जाति के विकास के प्रारम्भ से ही परम्परा है। अब कम्प्यूटर ने आकर इनकी बहुत मदद की है लेकिन वह भी बिना इनके तो नहीं चलेगा। कम्प्यूटर को कुछ दे दीजिएगा तब बतायेगा आगे चलकर। देने वाला तो स्थूल आदमी ही चाहिए और फिर जो कुछ वो आंकड़े ला के देता है उसका विश्लेषण का काम भी आप लोगों का है। **इसलिए आपका ये समाज बहुत ही आभारी है, ये सरकार भी आभारी है कि आप लोग बहुत अच्छा काम कर रहे है और हम सभी ऋणी हैं इस मामले में।** मैं चाहता हूं कि और भी वैज्ञानिक तरीके से फसल का आकलन निकालिये जिससे जो यह आकलन होता है उसमें पिछले साल की तरह आगे गड़बड़ नहीं हो। इस साल जो हो गया सो हो गया आगे हम लोग ठीक रहें इसके लिए हम आपसे निवेदन करेंगे। इन्हीं शब्दों के साथ मैं एक बार राष्ट्रपति जी को फिर बहुत धन्यवाद देता हूं कि वो इसके लिए कृषि में बहुत रुचि रखते हैं और बार-बार आ करके हम लोगों को उत्साहित करते हैं।

धन्यवाद।